स्त्री जीवन की सामाजिक समस्याएं ('एक ज़मीन अपनी' उपन्यास के संदर्भ में)

अमृत लाल जीनगर – शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार प्रसार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, केन्द्र–धारवाड़
Email - aljinger@gmail.com

सरांश –

चित्रा मुद्गल का साहित्य मानवीय संवेदनाओं एवं हृदय की कोमल भावनाओं का प्रत्यक्षीकरण है। वे नारी समाज की एक सजग प्रहरी है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री जीवन की सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। आज उपभोक्तावादी संस्कृति ने नारी के श्रेष्ठ स्वरूप का ह्रास किया है। आज की नारी **'जो दिखता है, वो बिकता है।'** की संस्कृति में पड़ अपने 'स्व' को ही भूल गई है। वह इन कॉर्पोरेट के महारथियों के हाथ की कठपुतली बनने को स्वयं तत्पर है।

चित्राजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री की सामाजिक जीवन में दयनीय स्थिति, समाज द्वारा तिरस्कार, उसकी व्यथा, पारिवारिक जीवन की समस्याएं, यौन जीवन में उसका मुखर व दमित रूप, उसकी कुंठा व तनाव, उसकी शिक्षा तथा आधुनिक परिवेश में विघटित और तिरस्कृत स्त्री अस्तित्व का विश्लेषण करते हुए स्त्री की मनोदशा जैसी सामाजिक समस्याओं को उजागर करने का सम्भावित प्रयास किया है। कुछ समस्याओं को प्रमुखता से उठाया हैं, तो कुछ को गौण रूप में कहा गया हैं, परन्तु कुछ समस्याएं ऐसी भी हैं, जिनकी तरफ मात्र इशारा भर किया गया है। चित्राजी का उपन्यास **'एक ज़मीन अपनी'** भी स्त्री जीवन की सामाजिक समस्याओं को यथार्थ रूप से प्रत्यक्ष करता है साथ ही यह उपन्यास स्वच्छंद जीवन शैली से उत्पन्न स्त्री समस्याओं का कथन करता है।

सम्भवतः अर्थबल नारी जीवन की सामाजिक समस्याओं के समाधान का सबसे बड़ा हथियार है। नारी को यह शक्ति इतनी आसानी से उपलब्ध नहीं होने वाली। इसके लिए उसे संघर्ष करना ही पड़ेगा। आज की नारी इसके लिए हर समय तैयार दिखती है।

मानव समाज की उन्नति नारी की उन्नति पर निर्भर है। यही कारण रहा है कि किसी भी युग में, किसी भी समाज ने उत्कर्ष प्राप्ति में नारियों के सम्मान की अवहेलना का कोई भाव प्रदर्शित नहीं किया। सदियों से ही हम नारी को स्थान–स्थान पर दिव्य पद पर प्रतिष्ठित पाते है। ममता की मंजूषा, स्नेह का सदन, दया का उद्गम, क्षमामय सुमेरू, विधाता की कलापूर्ण सृष्टि का आधार, पृथ्वी की कविता, देश के निर्माण की आधारशिला, करूणा की गंगा, उमा–रमा सरस्वती के समान नारी का इस भारतीय वसुन्धरा पर प्राचीन काल से ही परमादरणीय स्थान रहा है। शक्तिस्वरूपा नारी पुरूष की आद्यशक्ति मानी गई है। नारी को लक्ष्य कर किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि –

मानवता है मूर्तिमती तू, भाग्यभाव भूषण भण्ड़ार।
दया क्षमा ममता की आकार, विश्व प्रेम की है आधार।।

भारतीय स्मृतिकारों ने स्त्री को अधिक सम्मान व प्रतिष्ठा देते हुए किसी भी विधि–विधान को नारी की अनुपस्थिति में अपूर्ण माना है। मनुस्मृति में तृतीय अध्याय में यहाँ तक लिखा गया है कि –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रतास्तु न पूज्यते, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।[1]

यह भारतीय दर्शन का एक प्रमुख अंग है, जिसका अर्थ है जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ सभी देवता वास करते हैं, परन्तु जहाँ नारी की पूजा नहीं होती है, आदर, सम्मान नहीं होता है, नारी का अपमान होता है, वहाँ सभी क्रिया–काण्ड निष्फल हो जाते हैं।

भारतीय मनीषियों ने नारी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया है। नारी सृष्टि की सृजक है। वह पुरूष की आद्यशक्ति है। भारतीय संस्कृति में जितनी भी शक्तियों की कल्पना की गई है। वह सब नारी रूप में की गई है। शक्ति के रूप में शिव के साथ पार्वती विराजित है, कल्याण व मंगल के कर्ता गणेश, धन व समृद्धि की देवी लक्ष्मी के बिना अपूर्ण है, दुष्टों व अत्याचारियों का संहार करने

वाली देवी कालिका है। सामाजिक दृष्टि से चर्चा करे तो मर्यादा पुरूषोत्तम राम, सीता के बिना अधूरे है। जीवनदायी गंगा व यमुना को भी देवी या माँ के रूप में स्त्री कल्पना में ही पूजा जाता है। अथर्ववेद में कहा गया है –

नारी शील, राष्ट्रीय रक्षा तथा कर्त्तव्य की खान है।[2]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में परिस्थितियाँ बदलती गयी और आवश्यकताएं बढ़ती गयी तथा इन परिस्थितियों में स्त्रियों को अपनी हद पार करनी पड़ी। स्त्रियों को सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा जिससे उसका एक नई दुनिया से परिचय हुआ, जो कि उसके लिए एक स्वप्निल दुनिया थी। आज तक अनछुई और अनजान स्त्री के अधिकारों एवं सामर्थ्य में भी वृद्धि हुई। कालान्तर में स्त्रियों की समस्याओं में भी काफी बढोतरी हुई तथा स्त्रियाँ सभी क्षैत्रों में शोषित, प्रताड़ित व आहत होने लगी।

आज सामाजिक जीवन में नारी की पहचान ही परपेक्षी हो गयी, वह किसी की माँ, किसी की पत्नी, किसी की बहु, किसी की भाभी, किसी की बहन, किसी की बेटी, तो किसी की पुत्री बनकर रह गयी है। सामाजिक रीति–रिवाज, पारिवारिक बन्धनों में बंधी नारी, बुद्धि और भावना दोनों ही स्तरों पर परमुखोपेक्षी हो गयी। उसे त्याग, ममता, वात्सल्य, परोपकार, सेवा, बलिदान, धर्म जैसे शब्दों के घेरे में बाँध दिया गया।

समय–चक्र के साथ स्त्रियों को पग–पग पर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान समाज में स्त्री की प्रतिष्ठा व सम्मान धीरे–धीरे कम होता जा रहा है अर्थात पुरूष प्रधान समाज में स्त्री की बढ़ती महत्ता के कारण स्त्री को अतिरिक्त कार्य देकर उसकी समस्याओं में वृद्धि कर दी है। इन्हीं समस्याओं के कारण आधुनिक लेखकों एवं लेखिकाओं ने स्त्री समस्याओं को अपनी लेखनी का आधारभूत विषय बनाया है। स्त्री जीवन की समस्याओं को आधुनिक काल में स्वयं महिला लेखिकाओं ने अधिक प्रभावशाली रूप से उजागर किया है। जिसमें प्रमुख रूप से **चित्रा मुद्गल** ने स्त्री समस्याओं पर लेखन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक जीवन जीने वाली आधुनिक स्त्रियों के जीवन दर्द को उजागर करने का प्रयास किया है।[3]

स्त्री जब अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहती है, तो उसके सामने अनेक सामाजिक समस्याएं आती है। इन सामाजिक समस्याओं को उजागर करने वाली हिन्दी की लब्ध प्रतिष्ठ हिन्दी लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल का स्थान शीर्षस्थ है। नारी लेखन को अपनी विशिष्ट शैली में चित्रित कर उन्होंने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है। चित्रा मुद्गल जी ने अपने उपन्यास **'एक ज़मीन अपनी'** में नारी जीवन के सामाजिक संघर्ष को अपनी कलम का प्रमुख विषय बनाया है।

नारी आन्दोलन को जनव्यापी बनाने व अधिक बलिष्ठ करने में साहित्य की प्रमुख भूमिका रही। साहित्य में भी विशेषकर उपन्यासों में नारी जीवन की सामाजिक समस्याओं को विशेष रूप से उजागर किया गया है।जैसा कि **'एक ज़मीन अपनी'** की अंकिता जब माँ की मृत्यु पर घर लौटती है तो यह देखकर हैरान होती है कि उसकी माँ की चिता की आग भी ठंडी नहीं हुई और उसके भाई बँटवारे को लेकर तू–तू, मैं–मैं पर उतारू हो जाते है। जब उसकी छोटी भाभी माँ की इच्छानुसार अंकिता का पक्ष रखती है तो वे उसे बेइज्जत करने में कोई कसर भी नहीं छोड़ते है।'[4] अंकिता का पारिवारिक जीवन महज कवि की कल्पना द्वारा गढ़ा गया प्रतीत नहीं होता। अंकिता के पति द्वारा उसका शोषण, उसका तिरस्कार, वो भी तब, जब वो संजय के लिए अपने सगे–सम्बंधियों को भी ठोकर मारकर उसके पास आ गयी थी।

आधुनिक काल में नारी को माता बनने में अनेक समस्याएँ आने लगी है। आधुनिक जीवनशैली ने काफी हद तक नारी को मातृत्व सुख से वंचित होने के लिए बाध्य कर दिया है। चित्रा जी ने अपने उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' में नारी प्रजनन से सम्बंधित समस्याओं का अनेक स्थलों पर उद्घाटन किया है। उन्होंने जो समस्याएँ अपने उपन्यासों में रेखांकित की है, वे मात्र कल्पना पर आधारित न होकर आधुनिक नारी के सामाजिक जीवन की वास्तविक समस्याएं ही है।

सामाजिक जीवन में मातृत्व सुख नारी को दिव्य पद प्राप्त करने के सुमंगल अवसर पर मिलता है। भारतीय समाज में माता का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। वेदों में भी माता को श्रेष्ठ, सम्माननीय पद प्रदान किया गया है। ऋग्वेद में तो माता को सबसे घनिष्ठ एवं प्रिय सम्बन्धी बताया गया है।[5]

त्वं हि नः पितावसो त्वं माता शतकृतो बभूविथ।[6]

समाज में नारी के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना सुरक्षित प्रसव व माँ का स्वस्थ जीवन है। इस समस्या पर सर्वाधिक ध्यान देने की महती आवश्यकता है। आज भारत दुनिया की तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में एक है। यहाँ के मेट्रो शहरों में विकसित देशों की तरह चमचमाते मॉल और सड़कें हैं, लेकिन असली भारत की हकीकत इससे अलग है। जहाँ न स्वास्थ्य सुविधा है और न शिक्षा। जहाँ आज भी हर पाँच मिनट में एक माँ बच्चे को जन्म देते समय दम तोड़ देती है। ऐसा ही नहीं कि यह स्थिति गाँवों में या गरीब इलाकों में ही है, अपितु शहरों में भी स्थिति अधिक अच्छी नहीं है।

भारतीय समाज में औरत को प्रसव के बाद द्विजा कहा जाता है। अर्थात माँ के रूप में उसका दूसरा जन्म होता है। घोर यातना को सहकर वह सृष्टि सृजन का कार्य सम्पन्न करती है, परन्तु पुरूष यह नहीं समझता है। एक ओर जहाँ प्रसव के दौरान स्त्री अपनी जीवन–मृत्यु की जंग लड़ती है, वही हमारे समाज में भगवान का दर्जा पाने वाले भगवानों के लिए वह पैसा कमाने का साधन मात्र

होती है। चित्रा जी समाज की डॉक्टरी के पैसे की हकीकत को भी उजागर करती है। उनके उपन्यासों में नारी की प्रसव सम्बंधित समस्याओं पर भी दृष्टि डाली गई है। जैसा कि 'एक ज़मीन अपनी' में नीता को जिन्दगी और मौत के बीच झूलती इस स्थिति में दिखाया गया है।

स्त्री के दुःखों का कहीं अंत नहीं है। स्त्री का तो जन्म ही शायद शोषित होने के लिए ही होता है। समाज में हर कहीं पुरूष रूपी भेड़िया उसे अपनी हवस का शिकार बनाता है और अगर वह कोई अपना हो, जिसकी हम बहुत इज्जत करते हो, सम्मान करते हो, जो पिता तुल्य हो तो यह और भी अधिक पीड़ादायक होता है। 'एक ज़मीन अपनी' में स्त्री की इस समस्या को उजागर किया गया है। उपन्यास की नायिका अंकिता का अपने पति सुधांशु के साथ किसी बात पर टकराव होता है, जो अलग होने की हद तक बढ़ जाता है। वह अपने पति सुधांशु को छोड़ देती है। वह भविष्य में भी अपने पति से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती है। सुधांशु से उसने प्यार की हद तक सर्वस्व समर्पण किया था। उसके लिए उसने अपने घर को छोड़ दिया, उसके लिए अपने सगे–सम्बंधियों की परवाह नहीं कि लेकिन बदले में उसे क्या मिला ? सुधांशु की उपेक्षा, उसका अत्याचार वो भी पशुता के समकक्ष।

आँचल और आँखों की तरलताओं को एक स्त्री जब तक अपनी सहनशीलता से समान रखेगी तब तक वह परिवार चलता रहेगा। लेकिन बर्दाश्त की भी एक सीमा अवश्य होती है। इसी सीमा का उल्लंघन होने पर 'एक ज़मीन अपनी' के मि. गुहा एवं उनकी पत्नी जरीना के बीच संग्राम होता है। मि. गुहा की पूर्व ब्याहता पत्नी जरीना, जो किसी जमाने में मि. गुहा के साथ अंग्रेजी नाटकों में बकायदा हिस्सा लिया करती थी और उसके पच्चीस वर्षीय जवान बेटे की जन्मदायिनी माँ भी है, फिर भी बॉबी ठाकुर के चलते ही पति द्वारा उपेक्षित और परित्यक्त होती है।[7] इस प्रकार समाज में स्त्रियों को अपने वैवाहिक जीवन में भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं।

स्त्री–पुरूष के बीच सम्बन्ध की समस्या ऐसे पवित्र सम्बन्धों में भी उत्पन्न होने लगी है, जो कि अकल्पनीय ही है। भाई–बहन, बुआ, फूफा, चाचा, ताऊ, मौसा–मौसी जैसे परिपक्व पारिवारिक सम्बन्ध भी आज महत्त्वहीन होते जा रहे हैं। क्योंकि सम्बन्ध का आधार संवेदना होती है और अगर संवेदना को ही सम्बन्धी कुचलने लगे और सभी उसमें मौन स्वीकृति दे तो कोई इन सम्बन्धों को कैसे स्वीकार कर सकता है। स्त्री–पुरूष सम्बन्धों के पतन का यह चरम स्थल है। इन सभी सम्बन्धों के अलावा भी स्वयं चित्रा जी अपने उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' में लिखती है – **''स्त्री मर्द बनकर समाज में समानता चाहती है, स्त्री बनी रहकर क्यों नहीं ? स्त्रीत्व के गुणों को बरकरार रखते हुए ? ..... स्त्री की स्त्रीत्व से मुक्ति नहीं चाहिए। उन रूढ़ियों से मुक्ति चाहिए, जिन्होंने उसे वस्तु बना रखा है .....''**[8]

चित्रा मुद्गल जी ने वर्तमान समाज में व्याप्त 'भोगवाद' की समस्या को भी अपने उपन्यासों में प्रमुखता से उठाया है। उनके अपने उपन्यास' एक ज़मीन अपनी' की नीता एक आधुनिक नायिका है। वह विवाह को बंधन मानती है तथा अपने जीवन में मुक्त भोग को स्वीकार करती है। वह सुधीर गुप्ता के साथ बिना विवाह के रहने लगती है। इतना ही नहीं वह उसके बच्चे की माँ भी बनती है। नीता अपनी सफलता में अपनी देह को सीढ़ी बनाती है। वह नौकरी पक्की करने के लिए छूटी हुई कम्पनी के मालिक से सम्बन्ध भी बनाती है। उसके गंदे चरित्र की चर्चा भी गरमाती है, उसके ऑफिस में उसके सहायक इस प्रकार उसके यौन व्यवहार को बताते हैं – **''क्या बात करती हो तुम उसके बिंदासपने की, बोल्डनेस की हुहं! उसकी एक रात की कीमत है ओबराय कर डिनर, स्टूडियों –210 की रंगीन शाम, तेजपाल का आखिरी शो या खंडाला की आउटिंग''**[9]

यह निर्विवाद सत्य है कि आज स्त्रियों की यौन तृप्ति की समस्या बढ़ती जा रही है। हमें उन समस्याओं का समाधान करने का उचित एवं नैतिक मार्ग भी अपनाना चाहिए। परन्तु उसके लिए सभी सीमाओं व मर्यादाओं का उल्लंघन स्वयं स्त्री के लिए ही घातक सिद्ध होगा। चित्रा मुद्गल जी 'एक ज़मीन अपनी' की अंकिता के माध्यम से यह संदेश समस्त जाति तक पहुँचाना चाहती है।

नारी का जीवन संघर्ष का पर्याय माना जाता है। नारी चाहे जहाँ भी हो, जिस रूप में भी हो उसकी नियति उसका पीछा नहीं छोड़ती है। अगर वह घर से बाहर जाती है तो भीड़ रूपी भेडिये उसे काटने को दौड़ते है। इस बाह्य आतंक से मुक्ति के लिए नारी घर की चारदीवारी के बंधन को सहर्ष स्वीकार कर लेती है। परन्तु उसकी पीड़ाएँ उसे वहाँ भी घेर लेती है। वहाँ भी उसके दुःखों का अंत नहीं है। चित्रा जी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की इस बेहद अंतरंग एवं स्याह पहलू को परोक्ष रूप से उजागर करने का भरसक साहस, प्रयास किया है।

आज नारी के मन में शिक्षा के प्रति अत्यधिक चेतना है। वह समझ गई है कि शिक्षा हमें संस्कार देती है। सोचने–समझने की शक्ति प्रदान करती है। शिक्षित महिला ही समाज एवं राष्ट्र को सुदृढ़ता प्रदान कर सकती है। यदि नारी शिक्षित हो तो पूरा परिवार ही शिक्षित, संस्कारवान एवं पल्लवित हो उठता है। नारी की शिक्षा पूरे परिवार, समाज एवं राष्ट्र को महका सकती है। वह समझ गयी है कि अशिक्षा एक ऐसी अंधेरी गली के समान है, जहाँ कहीं भी रोशनी दिखाई नहीं देती। आज नारी कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी शिक्षा को जारी रखना चाहती है। नारी शिक्षा की महत्ता को सभी विद्वानों ने समवेत स्तर में स्वीकार किया है।

आर्य समाज के संस्थापक एवं समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती नारी शिक्षा पर कहते है कि – **''राष्ट्र, समाज, प्रशासन तथा परिवार के क्रिया–कलाप तब तक उचित ढंग से नहीं किये जा सकते जब तक स्त्रियों को शिक्षा न मिले।''**[10]

शिक्षित नारी विकसित समाज के उज्ज्वल भविष्य का शुभ संकेत है। शिक्षा के आधार पर ही चित्रा जी नारी मुक्ति की, नारी चेतना की कल्पना को सार्थक करना चाहती है। नारी की शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं की श्रृंखला में 'एक ज़मीन अपनी' की अंकिता भी है। अंकिता को भी अपनी पढ़ाई छूट जाने का गम सताता है। वह खेद खिन्न होकर कहती है – कि पढ़ाँऊ, पढ़ाती रहूँ और एक रोज प्रोफेसर हेड़ होकर अवकाश ग्रहण करू लेकिन यह संभव नहीं हो पाया।''[11] अंकिता की शिक्षा के लक्ष्य में और कोई नहीं अपितु उसका प्रेमी पति ही बाधा बनता है। वह उसकी कॉपी एवं कविता को फाड़ देता है। सामाजिक जीवन में स्त्री शिक्षा की महत्ता को कोठारी आयोग ने भी स्वीकार किया है। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा है – **''स्त्रियों की शिक्षा पुरूषों की शिक्षा से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। लड़कियों की शिक्षा पर जितना भी जोर दिया जाये उतना ही थोड़ा है।''[12]**

स्पष्टतः कह सकते है कि चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' द्वारा स्त्री जीवन की अनेक सामाजिक समस्याओं के साथ जीवन दर्द को उजागर किया है। साथ ही उपन्यास में समस्याएं अधिक है जो कि पूर्व मान्यताओं के आधार पर परम्परागत रूप से चली आ रही है, जिनको ढ़ोना नारी की नियति बन गई है। उपन्यास में चित्राजी के पात्र नारी समाज ही नहीं, अपितु समस्त मानव समाज को यह सन्देश प्रेषित करना चाहते हैं कि स्त्री जीवन में सामाजिक समस्याएं आती है, समस्याएं आती रहेंगी। लेकिन उनके आगे समर्पण कर देना, उनसे समझौता कर लेना, उनसे डरकर भाग जाना समस्या का हल कदापि नहीं हो सकता। उसके लिए केवल और केवल संघर्ष का मार्ग ही एकमात्र उपाय है।

संदर्भ सूची–

1. मनुस्मृति, 3/56
2. अथर्ववेद, 5/17/3
3. एक ज़मीन अपनी – चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पृष्ठ –119
4. वही, पृष्ठ –176
5. ऋग्वेद, 10/102/2/11
6. वही, 9/98/11
7. एक ज़मीन अपनी – चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पृष्ठ –51
8. वही, पृष्ठ –214
9. वही, पृष्ठ –30
10. भारत में नारी शिक्षा – जे. अग्रवाल, विद्या विहार, प्रथम संस्करण, पृष्ठ –11
11. एक ज़मीन अपनी – चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पृष्ठ –119
12. भारत में नारी शिक्षा – जे. अग्रवाल, विद्या विहार, प्रथम संस्करण, पृष्ठ –11